'सुबह हो गई है।'

नदी के किनारे हर दिन
सूरज चमकता है,
दिन आगे बढ़ता है,
चिड़ियाँ चह-चहाती हैं
पौधों पर ओस की बूंदे
चमक जाती हैं,
कलियाँ खिलने लगी हैं,
हवा मद-मस्त बह रही है,
पत्तों से सर्र-सर्र की
आवाज़ होने लगी है,
यह मधुर संगीत
कह रहा .... सुबह होने लगी है।

ठंडी हवा के झोंके
झुला रहे तितलियों को,
पंछी डालों पर उड़ते
कभी नीचे चुगते दानों को,
किसान हल-बैल लिए
जाते अपने खेतों को,
सूरज की रोशनी अब
तेज़ हो रही है,
सुबह हो गयी है।